गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण २९

यह सतत याद रखो : आदि में, प्रेम; मध्य में, सद्गुण; और अन्त में, एक बार फिर प्रेम। कुछ भी हो रहा हो, प्रेम पर दृष्टि जमाए रखो। यह परम लक्ष्य है। चाहे तुम लड़ रहे हो या बहुत कठिन समय से गुज़र रहे हो, चाहे तुम कष्ट भोग रहे हो, कठिन आर्थिक स्थिति से गुज़र रहे हो, कोई सम्बन्ध टूट रहा हो, पेशे-नौकरी में संघर्ष कर रहे हो—चीज़ें चाहे कितनी ही क्यों न बिगड़ जाएँ, प्रेम पर दृष्टि जमाए रखो। आदि में प्रेम और अन्त में प्रेम। जिधर भी तुम्हारी दृष्टि जाए, जो कुछ भी तुम छुओ, उसमें अपने भगवत्प्रेम को चमकने दो। कभी प्रेम को अपनी दृष्टि से ओझल मत होने दो। यदि तुम अपने सम्पूर्ण हृदय-क्षेत्र में, अपने सम्पूर्ण मस्तिष्क में, अपनी सम्पूर्ण सत्ता में प्रेम की अनुभूति नहीं भी करते तो भी एक छोटे-से स्थान को, अपनी सत्ता के बस एक नन्हे-से स्थान को ऐसा बना रहने दो जो प्रेम से स्पन्दित हो रहा हो। उसे कभी लुप्त न होने दो। उसे कभी ढको नहीं या दबाओ नहीं। सतत उसके सम्पर्क में रहो। वह सदा तुम्हारी आँखों में छाया रहे।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग*, “अन्त में प्रेम,” से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. १७२।